IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

ममता कालिया की कहानियों में नारी जागरण

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor, Dept. of Hindi, Government College Karauli, Rajasthan, India

सार

ममता कालिया (02 नवम्बर,1940) एक प्रमुख भारतीय लेखिका हैं। वे कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, कविता और पत्रकारिता अर्थात साहित्य की लगभग सभी विधाओं में हस्तक्षेप रखती हैं। हिन्दी कहानी के परिदृश्य पर उनकी उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। लगभग आधी सदी के काल खण्ड में उन्होंने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है। वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका "हिन्दी" की संपादिका हैं। ममता का जन्म 02 नवम्बर 1940 को वृन्दावन में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर और इन्दौर शहरों में हुई। उनके पिता स्व विद्याभूषण अग्रवाल पहले अध्यापन में और बाद में आकाशवाणी में कार्यरत रहे। वे हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के विद्वान रहे। साहित्य और समाज का संबंध, रचनाकार द्वारा यथार्थ परिस्थितियों का आंकलन करना ही होता है। ममता कालिया के कहानी संग्रह में नारी पात्र अस्तित्वहीन होकर अपने अस्तित्व की तलाश में लगातार संघर्ष कर रहे हैं। आज की नारी पुरूष के समक्ष ही नहीं अपितु अनेक क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित करने की तलाश में है। नारी ने अपनी मेहनत द्वारा अपने अस्तित्व को एक अलग पहचान दी है। वे परंपरागत रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ रही हैं। वे किसी प्रकार का शोषण व अत्याचार को सहन नहीं कर रही हैं बल्कि अन्याय के खिलाफ पूर्ण रूप से संघर्ष करती हुई नजर आ रही हैं। ममता कालिया के कहानी संग्रह 'मुखौटा' में नारी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है जिसका वर्णन विभिन्न कहानियों द्वारा किया गया है। ममता कालिया के 'मुखौटा' कहानी संग्रह की कहानी 'बिटिया मोरी' में नारी अपने स्वतंत्र विचारों द्वारा अस्तित्व की तलाश रही है। इसी कहानी संग्रह की कहानी 'प्रतिदिन' में महिमा नायिका का अकेलेपन से झूझते हुए व अविवाहित कामकाजी नारी होते हुए भी विवादास्पद जीवन यापन करना। 'उत्तर-अनुराग' कहानी में 'हिन्नी आंटी' का पति की बेवफाई को सहन करते हुए भी अपने अस्तित्व को कायम न कर पाना। 'श्यामा' कहानी में श्यामा नायिका अपने पति द्वारा अत्याचार व शोषण को सहन करती हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होना। 'सीमा' कहानी में नायिका 'सीमा' अपने द्वारा प्रताड़ित व दुःखों को सहन करती हुई अपने अस्तित्व अर्थात अपने स्व की पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना। इस शोध पत्र में ममता कालिया के कहानी संग्रह मुखौटा में नारी पात्र जो अस्तित्वहीन हुए, अपने अस्तित्व की तलाश में उन्हें जो संघर्ष करना पड़ा, सभी पहलुओं पर चिंतन करना भी इस शोध-पत्र का उद्देश्य है।

Copyright to IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

पररचय

स◌ाहि◌त्य क म◌ानव मन क◌ी हवश◌ेर् रमणीय अन◌ुि◌ूहि◌ कि◌ा ज◌ाि◌ा ि◌ै। समाज म◌े◌ं इसक◌ी पररहध बह◌ुि◌ ि◌ी व्य◌ापक व हवि◌◌ृि◌ ि◌ ि◌ी ि◌ै। कि◌ानी एक प्रक◌ार क◌ी कल◌ा ि◌ ि◌ी ि◌ै और इस कल◌ा क◌ा समाज से अलग ि◌ कर क ई मित्व नि◌ी रि◌ ज◌ाि◌ा। इसम◌े◌ं ज◌ीवन क गि◌र◌ाई ज◌ानन◌े व ज◌ीवन क◌ी व◌ास्ि◌हवकि◌ा क ज◌ानन◌े क◌ा अवसर हमलि◌ा ि◌ै। ममि◌ा क◌ाहलय◌ा क◌े कि◌ानी सग्र◌ंि◌ म◌े◌ं ज◌ीवन स◌ंब◌ंध◌ी समस्य◌ाओ◌ं का यथ◌ाथ अ◌ंकन करि◌े हुए अपन◌ी कि◌ाहनय ◌ं म◌े◌ं उज◌ागर हकय◌ा ि◌ै क् हक वि◌ स्व◌ंय न◌ार◌ी ि◌ कर न◌ार◌ी केन्द्र क ब्◌ा◌ंन कर सकि◌ी ि◌ै।

न◌ार◌ी अस्ि◌ि◌ा क◌ा अहिप्र◌ाय न◌ार◌ी क◌े स◌ाम◌ाहजक व आहथक अहधक◌ार ◌ं क◌ी प्र◌ास्ि◌ स◌े ि◌ै। वि◌म◌ान समय म◌े◌ं न◌ार◌ी ऐस◌े समय स◌े ग◌ुजर रि◌ी ि◌ै जि◌◌ां पर उसक◌ा एक प◌ा◌ंव घर स◌े ब◌ाि◌र ि◌ै और द◌ूसर◌ा रस ई केन्द्रि◌ट क◌े अ◌ंदर ि◌ै। समय क◌ी म◌ा◌ंग अन◌ुस◌ार न◌ार◌ी ज◌ीवन स◌ंब◌ंध◌ी समस्य◌ाओ◌ं क उि◌◌ार◌ा गय◌ा ि◌ै, और न◌ार◌ी अस्ि◌ि◌ा क◌ी ि◌लाश क◌ी ओर अग्रसर करन◌े क◌ा ब◌ीड़ा उठ◌ाय◌ा गय◌ा ि◌ै। ममि◌ा क◌ाहलय◌ा की

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

कि◌ाहनय◌ा◌ं ि◌ ग◌े हुए ज◌ीवन क◌ा यथाथ ि◌◌ै। इनक◌ी कि◌ाहनय ◌ं के द्ध◌ार◌ा न◌ार◌ी अपन◌ी अस्ि◌ि◌◌ा क◌ी ि◌ल◌ाश कर रि◌◌ी ि◌◌ै। इन्ह न◌े◌ं न◌ार◌ी क◌ी समस्य◌ाओ◌ं क बड़◌ी गि◌नि◌◌ा के स◌ाथ प्रि◌◌ुि◌ हकय◌ा ि◌◌ै। इनक◌ी कि◌ाहनय◌ा◌ं क◌ा हवर◌्य न◌ार◌ी ज◌ीवन क◌ा के वल प्र◌ेम और हवव◌ाि◌ ि◌क स◌ीहमि◌ नि◌◌ी ि◌◌ै बल्ि◌◌ ◌ आत्महवश्व◌ास म◌े◌ं व◌ृद्ध कर सम◌ाज म◌े◌ं अपन◌ी अस्ि◌ि◌◌ा क◌ी पि◌च◌ान कर◌ान◌ा ि◌◌ै। इन्ह न◌े◌ं यि◌ म◌ान◌ा ि◌◌ै हक न◌ार◌ी क अपन◌े म◌ानहसक ि◌र म◌े◌ं बदल◌ाव ल◌ान◌ा च◌ाहि◌ए , ि◌◌ाहक वि◌ अपन◌े अके ल◌ेपन , घ◌ुटन , म◌ुस्ि◌ क◌ी छटप◌ाि◌ट क◌ी स्र्थि◌◌ी स◌े ब◌ाि◌र आ सके ।[1]

न◌ार◌ी अस्ि◌ि◌◌ा क्◌ा ि◌◌ै ? क्◌ा प◌ुरूर◌् के सम◌ान अहधक◌ार ग्रि◌ण करन◌ा न◌ार◌ी अस्ि◌ि◌◌ा ि◌◌ै। क्◌ा के वल स्वि◌◌ंत्र ि◌ कर हनणय ल◌ेन◌ा य◌ा आहथक रूप स्वि◌◌ंत्र ि◌ न◌ा न◌ार◌ी अस्ि◌ि◌◌ा ि◌◌ै। सि◌◌ी म◌ायन◌े म◌े◌ं द◌ेि◌◌ा ज◌ाए ि◌ न◌ार◌ी अस्ि◌ि◌◌ा क◌ा अथ न◌ार◌ी के प्रहि सम◌ाज क◌ा दृहि◌क◌ोण व म◌ानहसकि◌◌ा म◌े◌ं बदल◌ाव और हजसम◌े◌ं

ि◌◌ुद न◌ार◌ी क◌ा दृहि◌क ण ि◌◌ी श◌ाहमल ि◌ ।

" न◌ार◌ी सशल्ि◌◌ करण के इस द◌ौर म◌े◌ं ि◌◌ारि◌◌ीय न◌ार◌ी हवर◌्यक दृहि◌ क◌ी प्रस◌ंहगकि◌◌ा अब प◌ूर◌े हवश्व म◌े◌ं हसद्ध ि◌ रि◌◌ी ि◌◌ै। न◌ार◌ी अब अबल◌ा , प्रहशहक्ष , स◌ुक मल◌ा नि◌◌ी◌ं रि◌◌ी। बड़◌े - बड़◌े स◌ंघर◌् और च◌ुन◌ौहि◌य◌ा◌ं और स◌ंकट ◌ं म◌े◌ं उसक◌ी रचन◌ात्मक ि◌था शस्ि◌ रूप◌ा छहव अब हवश◌ेर् रूप स◌े उज◌ागर ि◌ न◌े लग◌े ि◌◌ै। वि दय◌ा , क्षम◌ा , स्न◌ेि◌ , व◌ात्सल्य क◌ी प्रहि◌म◌ूहि◌ ि◌ ि◌◌ै ि◌◌ी , परव◌ार , सम◌ाज ि◌था र◌ाि◌ के हनम◌ाण और हवक◌ास म◌े◌ं ि◌◌ी ि◌र प्रक◌ार स◌े सहि◌य एव◌ं सम◌ाहि◌ि◌ हद ि◌न◌ी लग◌ी। "[1]

इक्क◌ीसव◌ी◌ं सद◌ी म◌े◌ं ि◌◌ी आज ि◌◌ारि◌◌ीय सम◌ाज म◌े◌ं न◌ार◌ी क वि◌ दज◌ा व सम्म◌ान नि◌◌ी हमल प◌ाया ज उस◌े हमल ज◌ान◌ा च◌ाहि◌ए था। वि◌म◌ान सम◌ाज म◌े◌ं ि◌◌ी वध◌ु - दि◌◌ेन , ि◌◌ल◌ाक आहद सब क◌ु छ ब◌ेधड़क ि◌म◌ार◌े सम◌ाज म◌े◌ं हनि◌◌ंयि◌◌ापूवक ि◌ रि◌◌ा ि◌◌ै। और हजसके हलए न◌ार◌ी क ि◌◌ी द र◌्◌ी म◌ान◌ा ज◌ाि◌◌ा ि◌◌ै।

" न◌ार◌ी अस्ि◌ि◌◌ा सहदय ◌ं क◌ी जड़म◌ानहसकि◌◌ा और स◌ाम◌ाहजक अ◌ंि◌हि◌य ◌ं और असम◌ानि◌◌ा के प्रहि बदल◌ाव ल◌ान◌ा च◌ाि◌ि◌◌ी ि◌◌ै। हशक्ष◌ा के प्रस◌ार और स◌ंच◌ार म◌ाध्यम ◌ं के क◌ारण बढ़ि◌◌ी ज◌ागरूकि◌◌ा के क◌ारण सम◌ाज म◌े◌ं न◌ार◌ी प◌ार◌ंपररक छहव एक पररवि◌◌िथ न स◌ंस्करण के रूप म◌े◌ं स◌ामन◌े आई ि◌◌ै। प◌ुर◌ान◌ी पररर्थहि◌य◌ा◌ं बदल◌ी ि◌◌े◌ं , पररव◌ार व्यवर्थ◌ाय◌े◌ं बदल◌ी ि◌◌े◌ं , अहधक◌ार च◌ेि◌न◌ा बदल◌ी ि◌◌ै हक◌ंि◌◌ु न◌ार◌ी क◌ी म◌ूलि◌◌ूि◌ स्र्थहि◌ म◌े◌ं अ◌ंि◌र नि◌◌ी◌ं आया। न◌ार◌ी क पररव◌ार के द◌ायर◌े ि◌क ि◌◌ी स◌ीहमि◌ म◌ानन◌े क◌ी म◌ानहसकि◌◌ा , पहत्नत्व और म◌ाि◌◌ृत्व क◌ी रूढ़ अवध◌ारण◌ाय◌े◌ं और कठ र ब◌ंधन ि◌था न◌ार◌ी हच◌ंि◌न क◌ी आदश छहव के प्रहि जकड़न उस◌े हकस◌ी ि◌◌ी स्वि◌◌ंत्र स च स◌े परि◌◌ेज करन◌ा हसि◌◌ाि◌◌ी ि◌◌ै। "[2]

वि◌म◌ान समय म◌े◌ं न◌ार◌ी अपन◌े अस्ि◌त्व के प्रहि सजग ि◌◌ै। ममि◌◌ा क◌ाहलय◌ा क◌ी कि◌◌ान◌ी स◌ंग्रि◌ म◌े◌ं न◌ार◌ी के अस्ि◌त्व , प◌ीड़◌ा , हवद्र ि◌ , स◌ंघर◌् क◌ा स्वर इनक◌ी कि◌◌ाहनय ◌ं म◌े◌ं प्रकट हुआ ि◌◌ै। ममि◌◌ा क◌ाहलय◌ा अपन◌ी कि◌◌ाहनय ◌ं के द्व◌ार◌ा सम◌ाज क प्रि◌◌ाहवि◌ करन◌े म◌े◌ं सफल रि◌◌ी ि◌◌ै। उन्ह न◌े न◌ार◌ी ज◌ीवन क◌ी अन◌ेक समस्य◌ाओ◌ं क ल◌ेकर कि◌◌ाहनय◌ा◌ं हलि◌◌ी ि◌◌ै। स्वि◌◌ंत्र◌ंि◌◌ा के ब◌ाद ि◌◌ी न◌ार◌ी अन◌ेक प्रक◌ार क◌ी क◌ु र◌ीहि◌य ◌ं , प्रथ◌ाओ◌ं , घर◌ेल◌ू हि◌◌ंस◌ा व अपन◌े अहधक◌ार ◌ं क प्र◌ाि◌ करन◌े के हलए उस◌े न◌ार◌ी स◌ंघर◌् के हवहवध र◌ुप ◌ं क◌ा हचत्रण हकय◌ा ि◌◌ै - म◌ा , पहत्न , बि◌न , ब◌ेट◌ी न◌ार◌ी के हवहवध रूप ज अपन◌े अस्ि◌त्व

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

पानो के हलए लड़ रिो िै , समाज मो उनक समानजनक थथान नहीं िै , इन सब का हचत्रण ममिा काहलया की किानी संग्रि मो हमलिा िै।

विमान समाज नारी यिो िी ि चािो वि घर , पररवार व समाज मो ि , िर जगि इस का श रण ि रिा िै परंिु आज िी समाज व्यवथथा मो िी इन पररस्थथहियं मो कुछ िास पररवि न नहीं हुआ िै। ममिा काहलया की किाहनयो हचरकु मारी , प्रहिपश्च , उत्तर अनुराग , अलमारी , श्यामा और सीमा आहदकिाहनय ं मो नारी अपने अस्ित्व के हलए संघर्ष करिी हुई हदिाई दोिी िै।

ममिा काहलया किी समाज के परो पररवोश मो समकालीन सरकार िू ंििी िै ि किी नयी स्वािंत्राय त्तर नारी क उसके पूरो वैिव और संघर्ष मो हचहत्रि करिी िैं। इनकी किाहनय ं मो अनुिव और अनुिूहि की दीस्ि , २हिक ण के िुलोपन के साथ हमलकर हिंदी किानी के उस स्वरूप क पररिाहरि करिी िै।

‘ हचरकु मारी ’ किानी मो ऐसी नारी का हचत्रण हदिाई दोिा िै ज स्वािंत्र हवचार ं वाली िै। वि हववाहिि जीवन जीने के िक मो नहीं िै। वि शादी के नाम पर अपनी आजादी क िोना नहीं चाहििी। “ हदशा के घर मो िर वि रौनक रििी। उसो बडी िैरानी ि िी जब आने वाले कििो , ‘ कै से रि

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

लोिती ि अकेली , हदल निीं घबरािा िुम्हारा ' । शादीशुदा लग समझािे , ' पैंिीस की उम्र इिनी ज्यादा िी नहीं िै िी। ' िमें बिाए कई अच्छा सा लड़का। िैरानी की बाि यि हक पच्चीस - िीस साल वैवाहिक जीवन के बाद िी पत्नियों में असुरक्षा की िावना थी। हदशा क िकरीबन इिने िी साल िो गये शादी शुदा लगं के ररश्िे पर िाि िे। "[3]

ममिा काहलया ने नारी जीवन क केंद्र मानकर कहानियां हलखी। इन्होंने नारी के दुि - दद क किानी में लाने का प्रयास हकया िै। जीवन के हवहिन्न पड़ावों पर जुझिी और िकलीफों क सिन करिी , और उनके जीवन की समस्याओं का हचत्रण हकया िै।

' अलमारी ' किानी में लड़की के मािा - हपिा की मनदशा के बारे में बिाया गया िै। जब एक लड़की का ररश्िा िय िो िा िै िब लड़की के मािा - हपिा दिेज एकहत्रि करने में लग जािे िै। ससुराल वालों की मांग पूरी करिे - करिे लड़की के मािा - हपिा के ऋण लेने की नौबि आ जािी िै और लड़के वाल की मांग पूरी न िोने पर केरसीन डालकर जलाने की स्थिहि व िलाक या घर से बािर हनकालने की स्थिहि बना देिे िै ससुरालवाले। किानी में बिाया गया िै हक " गाय बछड़ा बेचकर घड़ी , साइहकल , टांहजस्टर िो खरीद हलए िै , गुरूजी पर अलमारी निीं आयी िै। िोिी से िोिी अलमारी िी पांच सौ की िै। लड़के वाले की हलस्ट में अलमारी सबसे ऊपर हलखी िै। "[4] पररवार के िीिर - बािर सुरक्षा और संरक्षण की प्रहकया में औरिें पुरूषों के सािों जब बार - बार छली जािी िैं िो अपने - अपने मनचािे या उपलब्ध रािे िुद चुनिी िै या कई और रािा हमलने िक िी सिा पुरूष की शरण में रििी िैं।

आज नारी हजस मड़ पर खड़ी िैं उससे नारी अस्तित्व पर शंसय व्यि हकया जा रिा िै। क्या नारी अपने स्वंय की पिचान बना पायेगी " नारी लक्ष्मी िै , नारी देवी िै , नारी मािा िैं। इसहलए ि नारी की स्थिहि हचंिनीय िै। नारी अपने अस्तित्व और अपनी स्विन्त्रिा के हलए संघर्ष करिी आई िै। वि अपनी आत्महनिभरिा क प्रािि करने के हलए कहठन पररस्थिहियों का सामना करिी आई िै। ममिा काहलया की उत्तर - अनुराग किानी में िेमन्िी आंटी का अकेलापन पहि का कायथव्यस्िा का वणथन हकया गया िै। इस किानी में दशाया गया िै हक ' रेनू ' नाहयका का अकेलापन क दूर करने के हलए घर के कामों में अपने आप क व्यस्ि रखना। एक हदन कायव्यस्ििा और अकेलापन के कारण उनकी मृत्यु िो जािी िै। नारी सारी उम्र अपने आप क घर के कामों में , पहि की देखिाल व बच्चों के खयाल रखने में गंवा देिी िै पर उसकी किी अपनी स्व - पिचान निीं बना पािी न िी वि किी अपने हवचारों क हकसी के समक्ष खुलकर वणन कर पािी िै।

इनकी किाहनयों में घरेलू नारी जीवन की त्रासदी का वणन हकया गया िै , घर - पररवार से बािर शरण व अत्याचार का हशकार िो िी नारी का यथाथ अंकन हकया गया िै। दाम्पत्य जीवन में नारी का स्विंत्र व्यस्तित्व की चाि इनकी किाहनयों में मुख्य रूप से उिर कर आई िै। नारी क अपनी स्विंत्र पिचान बनाने के हलए आत्महनिथर बनना पड़ेगा।

' श्यामा ' किानी में श्यामा अपनी खुद की पिचान बनाने के हलए संघर्

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

करिी िै पर वि िुद की पिचान बना निीं िै पािी , और वि पहि द्वारा किए गए शरण व अत्याचार का शिकार ि जािी िै और एक हदन अपना दम ि ड़ देिी िै। “िुम हवर ध क् ं निी करिीं पत्नी ि घर िुमारा िै वे कैसे िावी ि सकिे िै। उनकी सख्ती के आगे एक निी चलिी गुस्से में िाथ िी उठा देिे िै।

िर बार उसकी बािें से पिा चलिा उसके पहि आिामक और गैर हजम्मेदार ि गये िै।

एक हदन जाजटाउन से गुजरिे हुए मेरी नजर एक मर कंकाल जैसी आकृहि पर पड़ी ज बड़ी पररहचि नजर से मेरी ओर देि रिी थी उसने स्िड़की से अपना सूिा सांवला िाथ हनकालकर मुझे बुलाया , मैं उसक आप क अंदर बुला निीं सकिी आजकल िाला लगाकर आहधम जािे िैं। िािी एक हदन अिबार के थथानीय पृष्ठ पर एक कालम में सबसे नीचे छ टी सी िबर हदिाई दी , रमेश चन्द श्रीवािव की पत्नी श्यामा श्रीवािव सीडी से हगरकर बेि श ि गई उपचार के हलए अस्पिाल ले जाया गया यिां आज सवरे दम टूट गया। ”[5]

विमान समय में िी नारी क ब लने का मौका निीं हदया जािा। नारी अस्मिा के हनमाण के हलए नारी की चुप्पी क कैसे ि ड़ा जाए। नारी अस्मिा के सामने उसकी सबसे बड़ी चुनौिी हपिृसत्तात्मक

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

संबंध, मूल्य और समाज है। नारी का कभी अपनी इच्छा का ही सवाल नहीं है, उसे कभी समाज माता-पिता व पति की इच्छा अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करना ही होता है।

'सीमा' कहानी में सीमा नायिका द्वारा यह दर्शाया गया है कि "पहले बच्चों क अपनी सीमाएं बताओ। फिर उससे कि 'सच ल' क सच। 'सीमा' उसका नाम ही मां-बाप में सीमा रख दिया था, अपनी सीमा सच कर उन्होंने उसकी संभावना, सपने और इरादे से कई मतलब नहीं था। इस पार ही क्या था ज उस पार से डर लगता। घर में मां बाप के अठपांचे चंगुल में सीमा घुट चली थी। पिता के मन में थोड़ी हमदर्दी थी। पर वे कायर थे। वे न सिर्फ मां में डरते बल्कि समाज से भी।"[6]

सीमा क लगा शादी के साथ साथ व सब बंदिशें खत्म हो जाएंगी ज इस घर में उसने झेली। पितृसत्तात्मक समाज में नारी की अपनी स्वतंत्रता पहचान व व्यक्तित्व नहीं है, नारी की अस्मिता क क्षय करने वाला पुरुष ही है।

ममता कालिया की कहानियों में ऐसी नारी का चित्रण दिखाई देता है ज स्वतंत्र विचारों वाली है, वह विवाहित जीवन जीने के हक में नहीं है। "और सबकी समस्याएं हूं होने में ही तत्पर रहती है।"[7] ऐसा वर्णन ममता कालिया की कहानी 'चिरकुमारी' में देखने को मिलता है। 'दिशा' स बची हुई कहानी मुश्किल से उसने यहां तक का सफर तय किया है, कई बार कठिनाइयों और कठिनाइयों का मुकाबला उसने अपनी शिक्षा और परिश्रम से किया था। "यूनिवर्सिटी में वह जंतु विज्ञान प्राध्यापक थी लेकिन उसकी रुचियों का क्षेत्र जीव जंतुओं के संसार से आगे था। इसलिए अगर कई छात्र अपनी समस्या लेकर आती वह उसके हल ढूंढने की कोशिश करती।"[8]

'प्रतिप्रश्न' कहानी में ऐसी नारी के स्वरूप क परिहार्य किया है ज अपनी अस्मिता की तलाश में है। इसमें अविवाहित कामकाजी नारी का वर्णन किया है ज अपने अकेलेपन क दूर करने के लिए ऑफिस में अधिक परिश्रम करती है। "यह मेरी जिंदगी है अकेला। रात क इतनी थककर घर पहुंचू कि बिस्तर पर पड़ते ही नींद आ जाए। आपकी तरह मुझे वैलियम फाइव नहीं होनी पड़ती।"[9]

हमारे समाज में नारी के अनेक रूपों का वर्णन मिलता है। वह हमारे समाज से ही किसी न किसी रूप में प्रताड़ित होती है या अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रयासरत रहती है। ममता कालिया का कहानी संग्रह 'मुखौटा' नारी के अस्मिता की तलाश की कहानियां हैं।

अन्त में कह सकते हैं कि 'मुखौटा' में नारी अस्मिता से संबंधित विविध आयाम नारी जीवन के तनाव व दाम्पत्य जीवन की मुश्किलें, संघर्ष, नारी जीवन की यातनाएं आदि का यथार्थ वर्णन किया गया है। इस कहानी संग्रह के माध्यम से नारी जीवन से जुड़ी हुई हर उस मानसिकता क बदलने पर जोर दिया है कि नारी व पुरुष में भिन्नता हो ही है पर उनमें भेद नहीं करना चाहिए। यह कहानी संग्रह नारी के कई रूपों में अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हुए परिलक्षित कर अपनी अस्मिता की तलाश कर एक नई सोच प्रदान करता है। इनके कहानियों से यह बात स्पष्ट हो जाती

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

है कि यह लेखन आत्मविश्वास और नारी अस्मिता को जागृत करता है। इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि इनका दृष्टिकोण पाश्चात्य न होकर भारतीय रहा है।[9]

विचार-विमर्श

ममता कालिया जी को बचपन से ही साहित्यिक परिवेश मिला। पिता हिन्दी और अंग्रेजी विषय के साहित्य में रुझान रखते थे और आपके चाचा भारत भूषण अग्रवाल उस समय के प्रख्यात साहित्यकार थे। बी.ए. की पढाइ के दौरान ही आपने कविताएँ लिखना आरंभ कर दिया। 'जागरण' अखबार के रविवारीय अंक में आपकी पहली कविता 'प्रयोगवाद प्रियतम' छपी।

आपने 1960 से साहसी और उत्तेजक कविताओं की रचना की। इन कविताओं ने सभी साहित्यकारों का ध्यान आकर्षित कर लिया। आपकी आरंभिक कविताओं में आक्रोश प्रतीत होता है। ममता कालिया जी अपने साहित्य लेखन की प्रेरणा के लिए मथुरा और

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

मुंबई कह लवशेष मानती हैं। "मर्ुरा मेरी कहालनयहं में बी धड़कती रहती है- कभी आवेश बनकर कभी पररवेश बनकर। मर्ुरा की यादेें दराज मेें पडे़ मुडे़-मुडे़ कागजहं की तरह हैं लजनमें तारतम्य नही बैठा पायी हँ।"

रवीन्द्र जी लिखते हैं, "ममता के लिए लेखन सबसे बड़ा प्यारा पलायन भी है। वह लकसी बात से परेशान हहगी तह लिखने बैठ जायेगी। उसके बाद एकदम संतुलित हह जाएगी।"[10]
ममता कालिया जी अपनी रचनाओं और नवीन सालहत्यक प्रयहग के कारण बहुचलचत और लवख्यात सालहत्यकार हैं। आपने अपनी रचनाओं में समाज के उन पहलुओं कह दशाया है जह अब तक अछूते रहे।
उपन्यास

1. बेघर
2. नरक दर नरक
3. प्रेम कहानी
4. एक पत्नी के नहट्स
5. दौड़
6. दुक्खम-सुक्खम

कहानी सग्रह

1. छुटकारा
2. सीट नंबर छह
3. एक अदद औरत
4. प्रलतलदन
5. उसका यौवन
6. जांच अभी जारी है
7. चलचत कहालनयाँ
8. बहिने वाली औरत
9. मुखौटा
10. लनमोही
11. लर्येटर रहड के कौवे
12. पचीस साल की लड़की
13. काके दी हट्टी

कलिता सग्रह

1. एक लटब्यूट टु पापा एंड अदर पहएम्स (अंग्रेजी कलवता संग्रह)
2. खाँडी घरेलू औरत

नाटक तथा एकांकी

1. आत्मा अठन्नी का नाम है।
2. आप न बदलेंगे।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

3. यहाँ रहना मना है।

ममता कालिया की उपलब्धियाँ

1. सन् 1963 में 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' दिल्ली की ओर से तथा सन् 1976 में 'सरस्वती प्रेस' की ओर से सवश्रेष्ठ कहानीकार एवं कहानी का पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।
2. 'उसका यौवन' कहानी संग्रह पर सन् 1985 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'यशपाल कथा सम्मान' से विभूषित किया गया।
3. सन् 1990 में 'अभिनय भारती' कलकत्ता की ओर से समग्र कथा-साहित्य पर रचना सम्मान तथा इसी वर्ष में 'रोटरी क्लब' इलाहाबाद की ओर से 'वाग्देवी सम्मान' प्राप्त हुआ।
4. सन् 1998 में 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास के लिए 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' की ओर से 'महादेवी वर्मा अनुशंसा सम्मान' मिला।
5. सन् 1999 में 'बोलने वाली औरत' कहानी संग्रह पर 'सावित्री बाई फुले' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
6. सन् 2002 में 'मानव संसाधन मंत्रिय' के तरफ से सृजनात्मक लेखन के लिए सम्मानित किया गया।
7. सन् 2004 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'साहित्य भूषण' सम्मान भी दिया गया।
8. सन् 2011 में आपको प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढाने के लिए 'लमही सम्मान' से पुरस्कृत किया गया।
9. 'कितने शहरों में कितनी बार' पुस्तक के लिए सन् 2012 में आपको द्वितीय 'सीता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

परिणाम

ममता कालिया ने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, संस्मरण और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम का जादू बिखेरा। उन्होंने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा। अपनी रचनाओं में वह न के वल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती हैं, बल्कि उन्होंने उनके उत्तर देने की भी कोशिश की है। उनके लिए स्व. विद्याभूषण अग्रवाल पहले अध्यापन में और बाद में आकाशवाणी में कार्यरत रहे।[11] वे हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के विद्वान् रहे और अपनी बेबाक़ बयानी के लिए जाने जाते रहे। ममता पर पिता के व्यक्तित्व की छाप साफ दिखाई देती है। 'प्यार शब्द घिसते घिसते चपटा हो गया है अब हमारी समझ में सहवास आता है' जैसी साहसी कविताओं से लेखन आरंभ कर ममता ने अपनी सामर्थ्य और मौलिकता का परिचय दिया और जल्द ही कथा-साहित्य की ओर मुड़ गईं। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में हाडमांस की स्त्री का चेहरा दिखाया।

जीवन की जटिलताओं के बीच जी रहे उनके पात्र एक निभाय और श्रेष्ठतर सुलूक की माँग करते हैं जहाँ आक्रोश और भावुकता की जगह सत्य और संतुलन का आग्रह है। ममता कालिया ने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा और अपनी रचनाओं में रेखांकित किया कि स्त्री और पुरुष कमतर भी नहीं वरन् समाजशास्त्रीय अर्थों में ज़्यादा का संघर्ष अलग नहीं, विकट और महत्तर है।[12]

निष्कर्ष

ममता कालिया के कथा साहित्य में जीवनसंबंधी

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

समस्याओं को यथार्थ अंकन करते हुए अपनी कहानियों में उजागर किया है कि वह स्वयं नारी होकर नारी के दर्द को बयान कर सकती है। नारी अस्मिता का अभिप्राय नारी के सामाजिक व आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति से है। [13] वर्तमान समय में नारी ऐसे समय से गुजर रही है जहां पर उसका एक पांव घर से बाहर है और दूसरा रसोई के चौखट के अंदर है। समय की मांग अनुसार नारी जीवन संबंधी समस्याओं को उभारा गया है, और नारी अस्मिता की तलाश की ओर अग्रसर करने का बीड़ा उठाया गया है। ममता कालिया की कहानियों से गुजरते हुए जीवन का यथार्थ है। इनकी कहानियों के द्वारा नारी अपनी अस्मिता की तलाश कर रही है। इन्होंने नारी की समस्याओं को बड़ी गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया है। इनकी कहानियों का विषय नारी जीवन का केवल प्रेम और विवाह तक सीमित नहीं है बल्कि आत्मविश्वास में

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

वृद्ध कर समाज में अपनी अस्मिता की पहचान कराना है। इन्होंने यह माना है कि नारी को अपनी मानसिक स्तर में बदलाव लाना चाहिए, ताकि वह अपने अकेलेपन, घुटन, मुक्ति की छटपटाहट की स्थिति से बाहर आ सके।[14]

सन्दर्भ

1) डॉ. अशोक सभ्रवाण, स्त्री विमर्श बनाम नारी अस्मिता, पृ. स. 20
2) ममता कालिया, मुखौटा, पृष्ठ सं 08
3) कालिया, ममता. "ममता कालिया की कहानी-परदेसी". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014.
4) कालिया, ममता. "पुस्तक की भूमिका". वाणी प्रकाशन. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014.
5) कालिया, ममता. "लेखक ममता कालिया का व्यक्तित्व". महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय. मूल (हिन्दी समय) से 5 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014.
6) कालिया, ममता. "ममता कालिया का व्यक्तित्व". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014.
7) शीर्षक :ममता कालिया की कहानियां - भाग 1, प्रकाशक :वाणी प्रकाशक, आईएसबीएन : 81-8143-300-9, प्रकाशित :फरवरी 02, 2005:, मुखपृष्ठ :सजिल्द :, भाषा:हिन्दी
8) शीषक:ममता कालिया की कहानियाँ भाग-2, प्रकाशक:वाणी प्रकाशन, आईएसबीएन : 81-8143-485-4, प्रकाशित:फरवरी 02, 2006, मुखपृष्ठ :सजिल्द, भाषा:हिन्दी
9) कालिया, ममता. "ममता कालिया की पुस्तकें". भारतीय साहित्य संग्रह. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014.
10) शीर्षक :कितने शहरों में कितनी बार, प्रकाशक :वाणी प्रकाशक :, आईएसबीएन : 9788126718764, प्रकाशित : जीती जी इलाहाबाद : राजकमल प्रकाशक, 2021
11) फरवरी जनवरी 01, 2010, मुखपृष्ठ : सजिल्द, भाषा:हिन्दी
12) "साहित्यकार ममता कालिया को व्यास सम्मान". मूल से 19 अक्तूबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 अक्तूबर 2017.
13) "Hindi writer Mamta Kalia to get the 27th Vyas Samman". मूल से 9 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 दिसंबर 2017.
14) "कहानीकार ममता कालिया को लमही सम्मान". नवभारत टाइम्स. 28 जून 2010. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. "समालोचना में समाचार". मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014.
15) हिन्दी भाषा की लेखिका ममता कालिया को द्वितीय सीता पुरस्कार Archived 2014-03-15 at the Wayback Machineजागरण जोश (हिन्दी)